दो सिर वाला पक्षी

एक तालाब में भारण्ड नाम का एक विचित्र पक्षी रहता था। इसके दो मुख थे, किन्तु पेट एक ही था। एक दिन समुद्र के किनारे घूमते हुए उसे एक अमृतसमान मधुर फल मिला। यह फल समुद्र की लहरो ने किनारे पर फैक दिया था। उसे खाते हुए एक मुख बोला- "ओ , कितना मीठा है यह फल ! आज तक मैंने अनेक फल खाये, लेकिन इतना स्वादिष्ट कोई नही था। न जाने किस अमृत बेल का यह फल है।"

दूसरा मुख उससे वंचित रह गया था। उसने भी जब उसकी महिमा सुनी तो पहले मुख से कहा- -"मुझे भी थोडा सा चखने को देदे।"

पहला मुख हँसकर बोला, "तुझे क्या करना है? हमारा पेट तो एक ही है, उसमे वह चला ही गया है। तृप्ति तो हो ही गई है।"

यह कहने के बाद उसने शेष फल अपनी प्रिया को दे दिया। उसे खाकर उसकी प्रेयसी बहुत प्रसन्न हुई।

दूसरा मुख उसी दिन से विरक्त हो गया और इस तिरस्कार का बदला लेने के उपाय सोचने लगा।

अन्त मे, एक दिन उसे एक उपाय सूझ गया। वह कही से एक विषफल ले आया। प्रथम मुख को दिखाते हुए उसने कहा- "देख ! यह विषफल मुझे मिला है। मैं इसे खाने लगा हूँ।"

प्रथम मुख ने रोकते हुए आग्रह किया- "मूर्ख ! ऐसा मत कर, इसके खाने से हम दोनो मर जायंगे।"

द्वितीय मुख ने प्रथम मुख के निषेध करते-करते, अपने अपमान का बदला लेने के

लिये विषफल खा लिया। परिणाम यह हुआ कि दो मुखों वाला पक्षी मर गया।

सच ही कहा गया है कि संसार मे कुछ काम ऐसे है, जो एकाकी नही करने चाहिये। अकेले स्वादु भोजन नही खाना चाहिये, सोने वालो के बीच अकेले जागना ठीक नही, मार्ग पर अकेले चलना संकटापन्न है; जटिल विषयो पर अकेले सोचना नही चाहिये।

सीख : मिलकर काम करो।

ब्राह्मण-कर्कटक कथा

दो मुँह वाला पक्षी

एक तालाब में भारुण्ड नाम का एक विचित्र पक्षी रहता था। उसके दो मुँह थे, किन्तु पेट एक ही था। एक दिन समुद्र के किनारे घूमते हुए उसे एक अमृतसमान मधुर फल मिला। यह फल समुद्र की लहरों ने किनारे पर फेंक दिया था। उसे खाते हुए एक मुँह बोला- "ओह, कितना मीठा है यह फल! आज तक मैंने अनेक फल खाए, लेकिन इतना स्वादिष्ट कोई नहीं था। न जाने किस अमृत बेल का यह फल है।"

दूसरा मुँह उससे वंचित रह गया था। उसने भी जब उसकी महिमा सुनी तो पहले मुँह से कहा- -"मुझे भी थोड़ा सा चखने को दो।"

पहला मुँह हँसकर बोला, "तुम्हें क्या करना है? हमारा पेट तो एक ही है, उसमें वह चला ही गया है। तृप्ति तो हो ही गई है।"

यह कहने के बाद उसने शेष फल अपनी प्रिया को दे दिया। उसे खाकर उसकी प्रेयसी बहुत प्रसन्न हुई।

दूसरा मुँह उसी दिन से विरक्त हो गया और इस तिरस्कार का बदला लेने के उपाय सोचने लगा।

अन्त में, एक दिन उसे एक उपाय सूझ गया। वह कहीं से एक विषफल ले आया। प्रथम मुँह को दिखाते हुए उसने कहा- "देख! यह विषफल मुझे मिला है। मैं उसे खाने लगा हूँ।"

प्रथम मुँह ने रोकते हुए आग्रह किया- "मूर्ख! ऐसा मत कर, इसके खाने से हम दोनों मर जाएंगे।"

द्वितीय मुँह ने प्रथम मुँह के निषेध करते-करते, अपने अपमान का बदला लेने के लिए विषफल खा लिया। परिणाम यह हुआ कि दो मुँह वाला पक्षी मर गया।

सच ही कहा गया है कि संसार में कुछ काम ऐसे हैं जो एकाकी नहीं करने चाहिए। अकेले स्वादिष्ट भोजन नहीं खाना चाहिए, सोने वालों के बीच अकेले जागना ठीक नहीं, मार्ग पर अकेले चलना संकटपूर्ण है; जटिल विषय पर अकेले सोचना नहीं चाहिए।

सीख : मिलकर काम करो।

अनुवाद - विष्णु कौल
एला